जब तोड़ा जाता है तब उसमें से सूत के समान एक उजला पदार्थ निकलता है जिसे हंस बड़े ही चाव से खाते हैं। वैसे ही जल में पनपने वाले पौधों और उनकी जड़ों को भी वे खाते हैं। इसी प्रकार मृणाल डंडों में कोई अंतराल पर गांठें होती हैं। इन गांठों में उजले रंग का द्रव भरा होता है। यह भी हंसों का प्रिय खाद्य या पेय हो जाता है। मृणाल डंडों की गांठों से निकलने वाले उजले दूध सदृश द्रव को हंस बड़ी ही कुशलता से पी जाते हैं। इनके इस पीने में सरोवर का जल आड़े नहीं आता। वे पानी को छोड़ कर मृणाल डंडों की गांठों का उजला द्रव अर्थात दूध पी जाते हैं और सरोवर के जल को छोड़ देते हैं। लगता है इसी प्रकार के नीर-क्षीर पृथक्करण से विद्वानों ने नीर-क्षीर विवेक का सूत्र ग्रहण किया होगा क्योंकि पानी के भीतर से मृणाल डंडों के दूध को पीने की बात तो सिद्ध हो जाती है। धीरे-धीरे यह बात गौण हो गयी और सामान्य दूध और पानी के मिश्रण से दूध को अलग कर पीने की बात प्रचलित हो गयी जिसे हम प्रतिदिन उदाहरण स्वरूप प्रयोग करते हैं।

प्रस्तुत निबंध में यद्यपि एक अत्यंत प्रचलित किंवदंती के सत्य की परीक्षा का प्रयास किया गया है किंतु यह निबंध हिंदी निबंधों में विश्लेषण क्षमता पैदा करने का प्रयास भी है। द्विवेदी जी यह बतलाना चाहते हैं कि निबंध में विश्लेषण की प्रवृत्ति कैसी होनी चाहिए और सत्य एवं तथ्य पर कैसे विचार किया जा सकता है। आधुनिक निबंधों की दृष्टि से यह निबंध एक मील का पत्थर प्रतीत होता

आचार्य द्विवेदी ने सामान्य से दिखनेवाले विषयों को अपने निबंधों का प्रतिपाद्य बनाया है। जब वही विषय इनकी विश्लेषण एवं व्याख्यीकरण क्षमता से उद्भासित होजाते हैं तो चमत्कारिक निबंधों का सृजन होता है। द्विवेदी जी के निबंधों के विषय सामान्य हैं किन्तु उनकी प्रस्तुति शैली विशिष्ट है कि निबंध पठनीय और आस्वादनीय हो जाते हैं इनकी इन्ही विशेषताओं के कारण इन्हें हिन्दी निबंध साहित्य का डॉ० जॉनसन कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि डॉ० जॉनसन अंग्रेजी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार थे जिनका प्रभाव संपूर्ण अंग्रेजी के निबंध साहित्य पर पड़ा है।